10

उत्तम ब्रह्मचर्य धर्मांग पूजा

श्री दशलक्षण धर्म विधान

1. उत्तम क्षमा
2. उत्तम मार्दव
3. उत्तम आर्जव
4. उत्तम शौच
5. उत्तम सत्य
6. उत्तम संयम
7. उत्तम तप
8. उत्तम त्याग
9. उत्तम आकिंचन्य
10. उत्तम ब्रह्मचर्य

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

: स्वर :
पण्डित सुनीलजी शास्त्री, राजकोट

: रचयिता :
कविवर पण्डित राजमल पवैया

: स्वर :
सुश्री श्वेतल जैन, राजकोट

10

श्री उत्तम ब्रह्मचर्य धर्मांग पूजन

सर्वोदय अहिंसा

सर्वः सर्वत्र नन्दतु

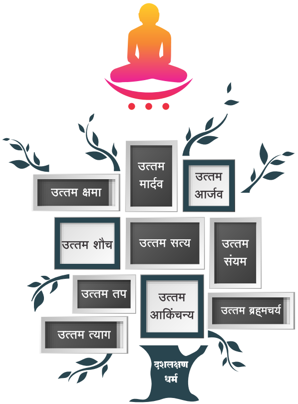

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

उत्तम ब्रह्मचर्य धर्मांग पूजन

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

स्थापना

(छन्द–कुण्डलिया)

ब्रह्मचर्य निजधर्म ही उत्तम सुखदातार।
लाख चौरासी शील के उत्तर गुण शिवकार।।
उत्तर गुण शिवकार परम सुख के दाता हैं।
परम शांति के सिंधु विभावों के घाता हैं।
जो नव कोटि पूर्वक धरता ब्रह्मचर्य व्रत।
वह प्राणी सदैव को पाता है सुख शाश्वत।।

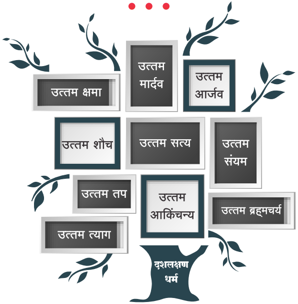

ॐ ह्रीं श्री उत्तमब्रह्मचर्यचन्यधर्माङ्ग!
अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वानम्।
ॐ ह्रीं श्री उत्तमब्रह्मचर्यधर्माङ्ग!
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री उत्तमब्रह्मचर्यधर्माङ्ग!
अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

अष्टक

(छन्द–अवतार)

जल शील भाव का लाय, त्रिविध रोग हर लूँ।
पाऊँ निज आत्मस्वरूप, निजपद आदर लूँ।।
पूजूँ उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म सदा स्वामी।
पाऊँ चौरासी लाख उत्तर गुण नामी।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमब्रह्मचर्यधर्माङ्गाय जन्म–जरा–मृत्यु–विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

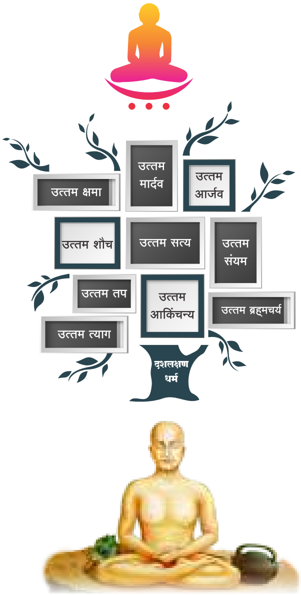

शीतल चंदन की गंध, भव–ज्वर नाशक है।
निज आत्म–स्वरूप अनूप, विभ्रम नाशक है।।
पूजूँ उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म सदा स्वामी।
पाऊँ चौरासी लाख उत्तर गुण नामी।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमब्रह्मचर्यधर्माङ्गाय क्रोधकषायविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

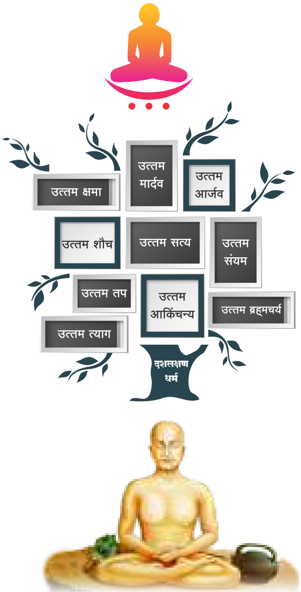

निज गुण अक्षत ही श्रेष्ठ मुझको भाए हैं।
अक्षय पद पाने के भाव उर आये हैं।।
पूजूँ उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म सदा स्वामी।
पाऊँ चौरासी लाख उत्तर गुण नामी।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमब्रह्मचर्यधर्माङ्गाय मानकषायविनाशनाय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

समभावी पुष्प महान हृदय सुहाए हैं।
कामाग्नि बुझाने के यत्न ही भाये हैं।।
पूजूँ उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म सदा स्वामी।
पाऊँ चौरासी लाख उत्तर गुण नामी।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमब्रह्मचर्यधर्माङ्गाय मायाकषायविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

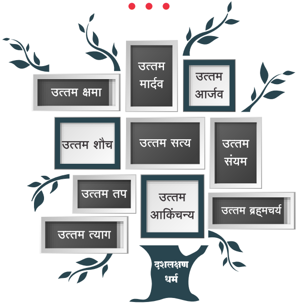

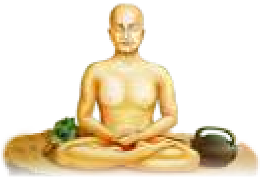

अनुभव रसमय नैवेद्य हे प्रभु! लाऊँगा।
पद निराहार सुखरूप मैं भी पाऊँगा।।
पूजूँ उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म सदा स्वामी।
पाऊँ चौरासी लाख उत्तर गुण नामी।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमब्रह्मचर्यधर्माङ्गाय लोभकषायविनाशनाय
नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

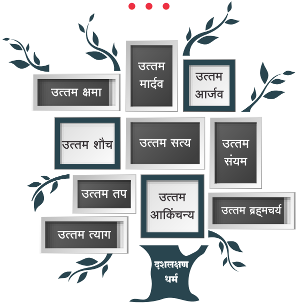

निज ज्ञानदीप की ज्योति उर को भायी है।
कैवल्यज्ञान की रीत मुझे सुहायी है।।
पूजूँ उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म सदा स्वामी।
पाऊँ चौरासी लाख उत्तर गुण नामी।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमब्रह्मचर्यधर्माङ्गाय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

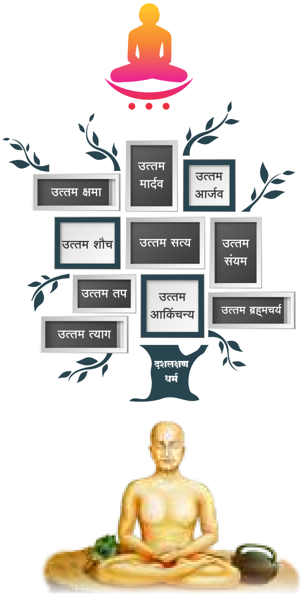

निज ज्ञान धूप की गंध उर को भायी है।
वसु कर्म नाश की शक्ति मैंने पायी है।।
पूजूँ उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म सदा स्वामी।
पाऊँ चौरासी लाख उत्तर गुण नामी।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमब्रह्मचर्यधर्माङ्गाय विभावपरिणति-विनाशनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

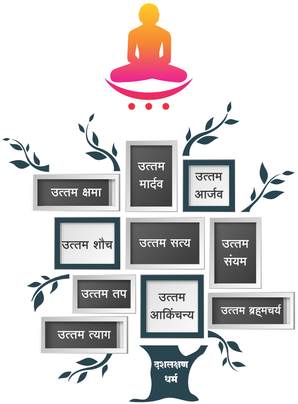

निज शुद्ध भाव फल हे प्रभु पाऊँगा।
फल मोक्ष प्राप्त कर नाथ शिवपुर जाऊँगा।।
पूजूँ उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म सदा स्वामी।
पाऊँ चौरासी लाख उत्तर गुण नामी।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमब्रह्मचर्यधर्माङ्गाय महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

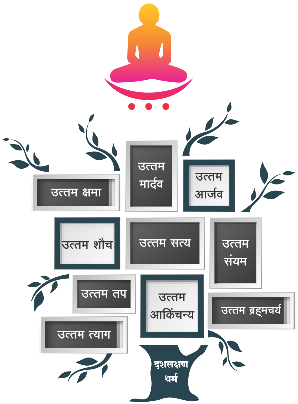

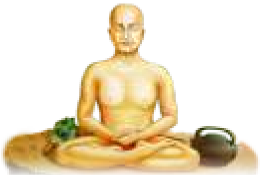

निज गुणमय अर्घ्य अपूर्व शुद्ध बनाऊँगा।
पदवी अनर्घ्य के हेतु निज को ध्याऊँगा।।
पूजूँ उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म सदा स्वामी।
पाऊँ चौरासी लाख उत्तर गुण नामी।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमब्रह्मचर्यधर्माङ्गाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

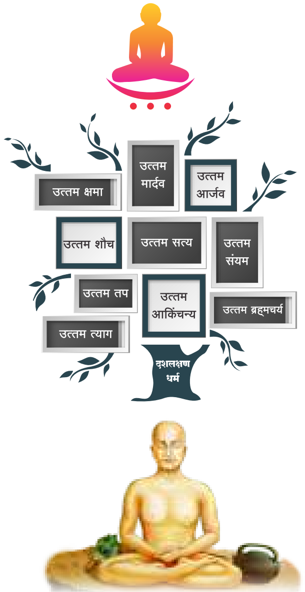

अर्घ्यावलि

(छन्द–रोला)

जहाँ वास हो महिलाओं का वहाँ न रहना।
अपने शील स्वभाव भाव रस में ही बहना।।
सभी नारियों को माता के समान मानो।
उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म ही उर में आनो।।

ॐ ह्रीं श्री स्त्रीसहवासवर्जनोत्तमब्रह्मचर्यधर्मांङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा

सर्वः सर्वत्र नन्दतु

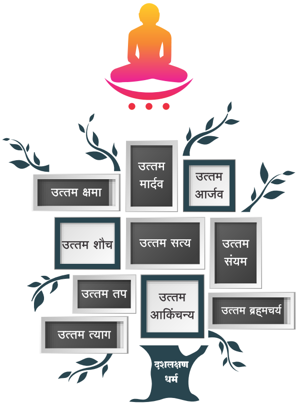

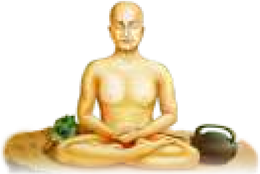

नारी तन की ओर न रति से देखो चेतन।
उनका हाव भाव विभ्रम मत पेखो चेतन।।
शील धर्म पालन से ही सुख होता मानो।
उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म ही उर में आनो।।

ॐ ह्रीं श्री स्त्रीमनोहरांगनिरीक्षणवर्जनोत्तम-
ब्रह्मचर्यधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

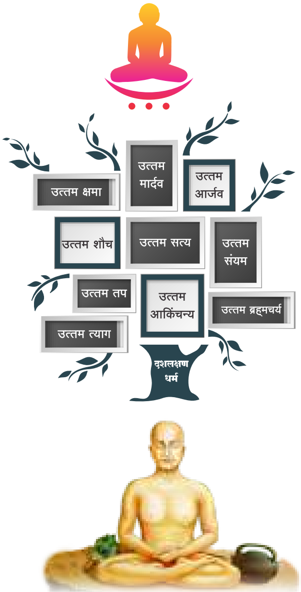

राग वचन मत कभी किसी से बोले चेतन।
जिनवाणी वच तौल-तौल कर बोले चेतन।।
राग वचन सुन पाप नहीं उर में उपजाओ।
उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म ही उर में आनो।।

ॐ ह्रीं श्री रागवचनवर्जनोत्तमब्रह्मचर्यधर्माङ्गाय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

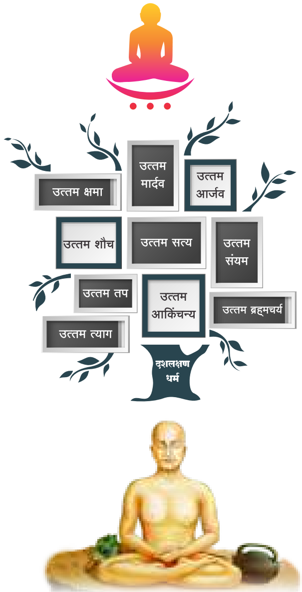

पूर्व भोग जो भोगे उनका करो न चिंतन।
परम शील भावों को धारो मन में चेतन।।
राग भाव पूरा त्यागो निज रस को जानो।
उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म ही उर में आना।।

ॐ ह्रीं श्री पूर्वभोगानुस्मरणवर्जनोत्तमब्रह्मचर्यधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

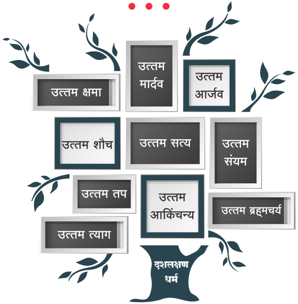

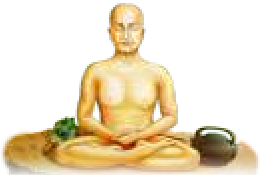

कामोद्दीपक भोजन थोड़ा भी मत खाना।
षट्रस व्यंजन देख रंच भी मत ललचाना।।
पूर्ण शील भावना सदा ही हृदय सजानो।
उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म ही उर में आनो।।

ॐ ह्रीं श्री वृष्येष्टरसवर्जनोत्तमब्रह्मचर्यधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

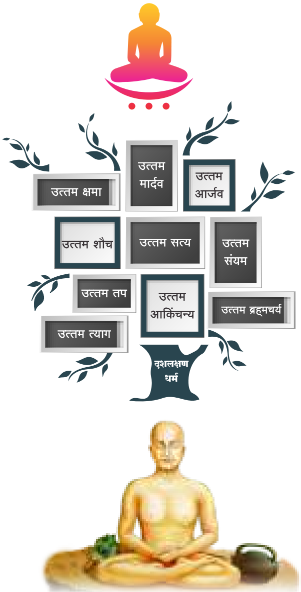

तन श्रृंगार न तेल फुलेल आदि से करना।
रुचिकर भूषण आभूषण मत तन पर धरना।।
शील आचरण से भूषित हो निज को जानो।
उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म ही उर में आनो।।

ॐ ह्रीं श्री स्वशरीरश्रृंगारवर्जनोत्तमब्रह्मचर्यधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्व: सर्वत्र नन्दतु

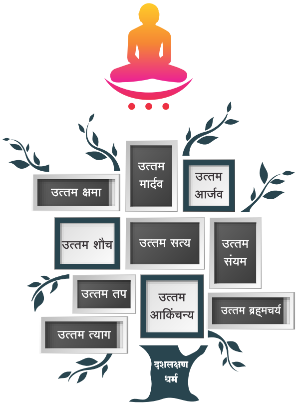

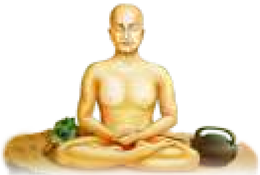

महिलाओं की शय्या पर तुम नहीं पोढ़ना।
महिलाओं के वस्त्रों को भी नहीं ओढ़ना।।
महा शीलव्रत दृढ़ता से पालन हो ठानो।
उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म ही उर में आनो।।

ॐ ह्रीं श्री स्त्रीशय्यासनवर्जनोत्तमब्रह्मचर्यधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

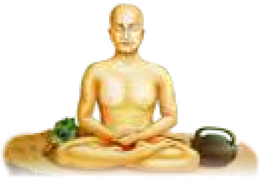

काम–कथा में कभी भूल मन को न लगाना।
विकथाओं को कभी न सुनना तथा सुनाना।।
काम मदन कंदर्प न पल भर मन में आनो।
उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म ही उर में आनो।।

ॐ ह्रीं श्री कामकथावर्जनोत्तमब्रह्मचर्यधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

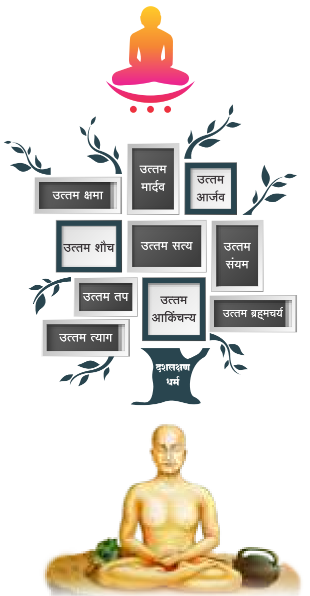

उदर पूर्ण भोजन तज ऊनोदर ही करना।
उत्तम पूर्ण शीलव्रत पालन में चित धरना।।
इससे शील तुम्हारा दृढ़ होगा यह जानो।
उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म ही उर में आनो।।

ॐ ह्रीं श्री उदरपूर्णाशनवर्जनोत्तमब्रह्मचर्यधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

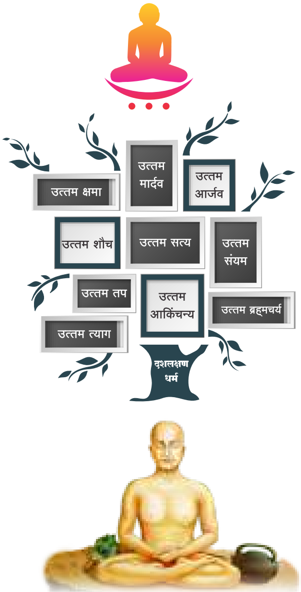

जो नव कोटिपूर्वक शील सुपालन करते।
अपने भी दुख हरते पर के भी दुख हरते।।
महा शील गुण धारण कर भव कष्ट मिटानो।
उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म ही उर में आनो।।

ॐ ह्रीं श्री नवधाशीलपालनोत्तमब्रह्मचर्यधर्माङ्गाय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

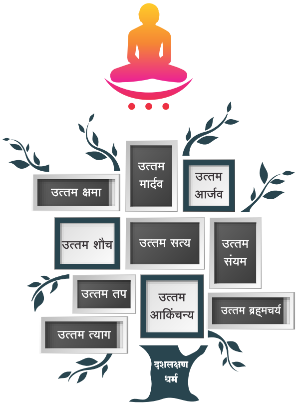

क्रूर काम वश बड़े बड़े प्राणी हो जाते।
क्रूर काम ज्वर से पीड़ित हो बहु दुख पाते।।
शोषण काम-बाण से होना कभी न प्राणी।
उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म उर धरते ज्ञानी।।

ॐ ह्रीं श्री शोषणकामबाणवर्जनोत्तब्रह्मचर्यधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

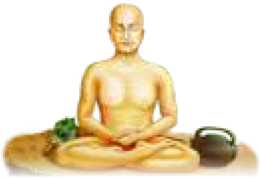

काम–बाण जिसके मन होता बहु दुख पाता।
मन संताप ताप होता व्याकुलता पाता।।
काम–बाण संताप न हो गुण शील जगाना।
उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म ही हृदय सजाना।।

ॐ ह्रीं श्री संतापकामबाणवर्जनोत्तमब्रह्मचर्यधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

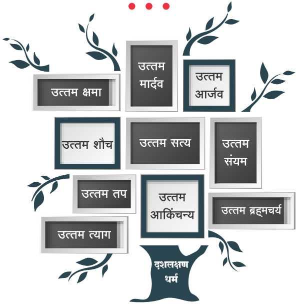

काम–बाण उच्चाटन हो तो होता दुखिया।
उच्चाटन शर काम न हो तो बनता सुखिया।।
काम–बाण उच्चाटन निज उर में मत लाना।
उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म ही हृदय सजाना।।

ॐ ह्रीं श्री उच्चाटनकामबाणवर्जनोत्तमब्रह्मचर्यधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

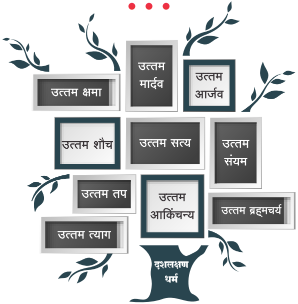

काम व्याधिवश कामी जन को कुछ न सुहाता।
वशीकरण शर काम न हो तो वह सुख पाता।।
काम–बाण के वशीकरण से तुम बच जाना।
उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म ही हृदय सजाना।।

ॐ ह्रीं श्री वशीकरणकामबाणवर्जनोत्तमब्रह्मचर्यधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

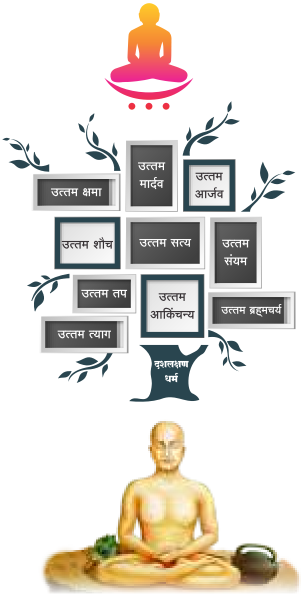

कामदेव से मूर्च्छित प्राणी सुध–बुध खोते।
शीलवंत ही कामदेव के बल को धोते।।
मोहन काम–बाण से बचकर निज को ध्याना।
उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म ही हृदय सजाना।।

ॐ ह्रीं श्री मोहनकामबाणवर्जनोत्तमब्रह्मचर्यधर्माङ्गाय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

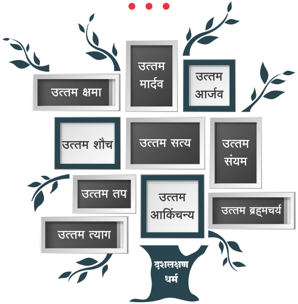

मोह शत्रु को जयकर काम शत्रु को जीतो।
काम–बाण की सकल व्याधियों से अब रीतो।।
पंच प्रकारी काम–बाण क्षय कर सुख पाना।
उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म ही हृदय सजाना।।

ॐ ह्रीं श्री पंचप्रकारकामबाणवर्जनोत्तमब्रह्मचर्यधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

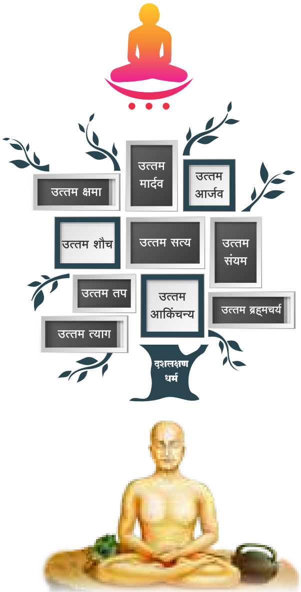

रूप त्रिया का लखकर जो हर्षित होता है।
वृथा पाप का बोझ शीश अपने ढोता है।।
नहीं काम–शर जिनके मन होता सुख जानो।
उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म ही उर में मानो।।

ॐ ह्रीं श्री मुलकनकामबाणवर्जनोत्तमब्रह्मचर्यधर्माङ्गाय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

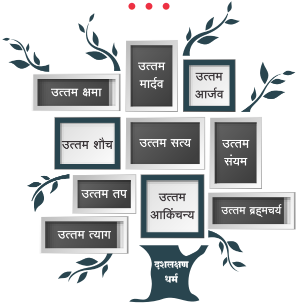

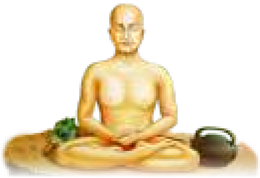

बार-बार नारी को जो देखना चाहता।
अवलोकन कर स्वयं आग में अरे दाहता।।
अपने उर में ऐसा शूल नहीं तुम लाना।
उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म ही हृदय सजाना।।

ॐ ह्रीं श्री अवलोकनकामबाणवर्जनोत्तमब्रह्मचर्यधर्माङ्गाय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

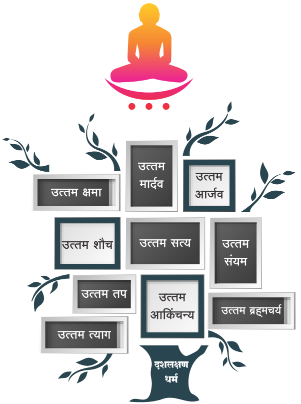

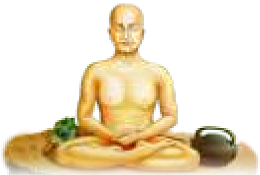

हास्य वचन कह जो नारी को मूढ़ रिझाते।
वह न चाहती पर ये उर संतोष न लाते।।
यही काम-शर कभी नहीं तुम उर में लाना।
उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म ही हृदय सजाना।।

ॐ ह्रीं श्री हास्यकामबाणवर्जनोत्तमब्रह्मचर्यधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

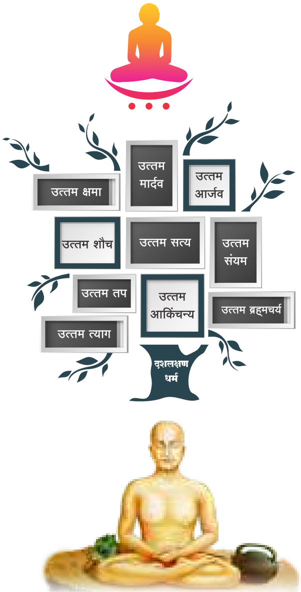

प्रकट वचन नारी से जब यह कह नहीं पाता।
किन्तु इशारे कर नारी का जिय ललचाता।।
इंगित चेष्टा वर्जनीय मत मन में लाना।
उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म ही हृदय सजाना।।

ॐ ह्रीं श्री इंगितचेष्टावर्जनोत्तमब्रह्मचर्यधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

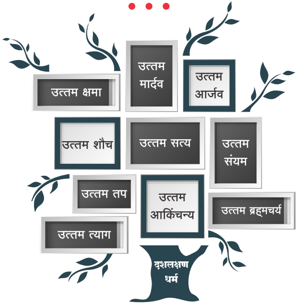

काम–व्याधि से स्त्री के बिन प्राण गँवाता।
माता सुता बहिन पत्नी पहचान न पाता।।
कामभाव जो जय करता है कष्ट न पाता।
उत्तम ब्रह्मचर्य धारण कर बहु सुख पाता।।

ॐ ह्रीं श्री मारणकामबाणवर्जनोत्तमब्रह्मचर्यधर्माङ्गाय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

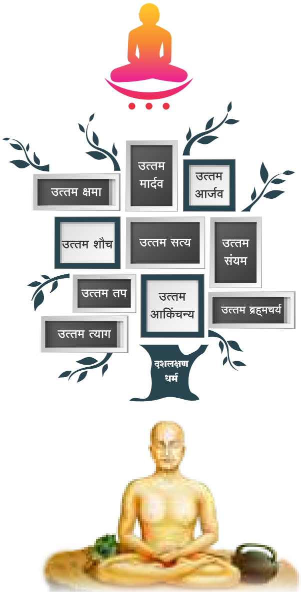

शील बाढ़ की ही विधि से जो रक्षा करते।
दश प्रकार से काम–बाण को पल में हरते।।
मुक्ति–वधू से परिणय करके वे हर्षाते।
उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म से शिवसुख पाते।।

ॐ ह्रीं श्री शुद्धब्रह्मचर्यधर्माङ्गाय अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

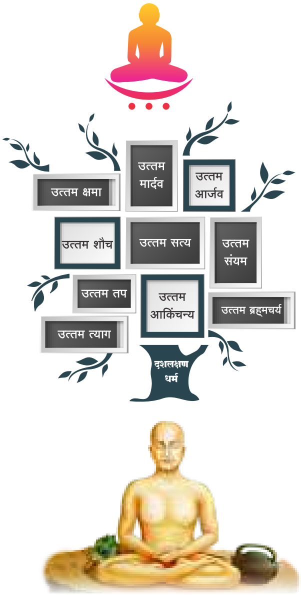

जयमाला

(दोहा)

ढाई अक्षर आत्मा, दो अक्षर का ज्ञान।
जो यह सम्यक् जानता, पाता पद निर्वाण।।
आत्मब्रह्म ही ब्रह्म है, परम भाव से युक्त।
ब्रह्मचर्य उर धार कर, प्राणी होते मुक्त।।

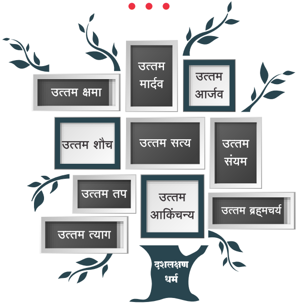

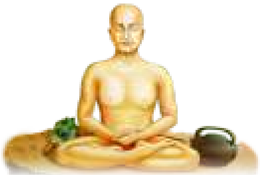

(छन्द–दिग्वधू)

किस मार्ग में जाते हो इसका निर्णय कर लो।
शिवपथ है या भव–पथ इसका निश्चय कर लो।।
मत नयन बंद करना जाग्रत होकर जाना।
पहले समकित लेकर मिथ्यात्व विजय कर लो।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

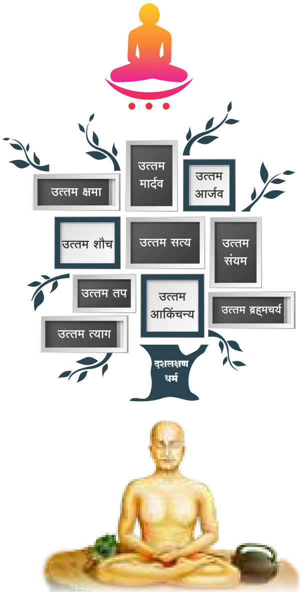

समकित बिन तप संयम कुछ काम न आएगा।
तप संयम लेना है तो समकित उर धर लो।।
फिर भवपथ को तज कर शिवपथ पर आ जाना।
चौकड़ी कषायों की तीनों ही जय कर लो।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

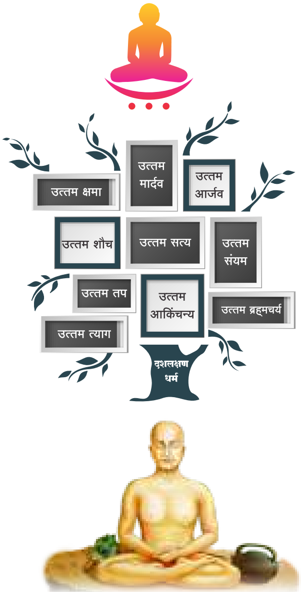

निज धर्मध्यान ध्याना रागादि भाव हरना।
दृढ़ शुक्लध्यान लेकर मोहादिक क्षय कर लो।।
श्रेणी पर चढ़ते ही दृढ़ यथाख्यात ले लो।
घातिया कर्म चारों सम्पूर्ण विजय कर लो।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

कैवल्यज्ञान लेना जो स्व–पर प्रकाशक है।
सर्वज्ञ स्व–पद लेकर आत्मत्व प्रकट कर लो।।
फिर योग नाश करना क्षय अघातिया करना।
सिद्धत्व स्व–गुण पाकर संसार सर्व हर लो।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

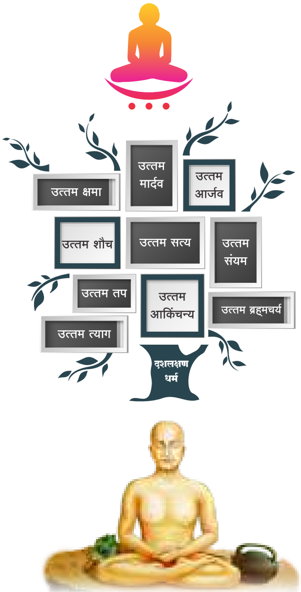

(सोरठा)

ब्रह्मचर्य का स्रोत शुद्धातम के पास है।
शिवसुख ओत-प्रोत ब्रह्मचर्य निज धर्म है।।

ॐ ह्रीं श्री शुद्धब्रह्मचर्यधर्माङ्गाय जयमालापूर्णार्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

आशीर्वाद

(छन्द–दोहा)

पूर्ण अर्घ्य अर्पण करूँ, ब्रह्मचर्य का स्रोत।
ब्रह्मचर्य निज धर्म ही, शिवसुख ओत–प्रोत।।

इत्याशीर्वादः

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

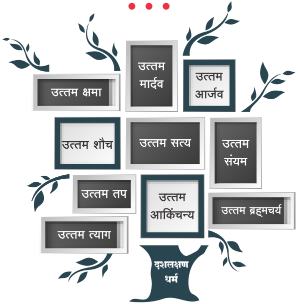

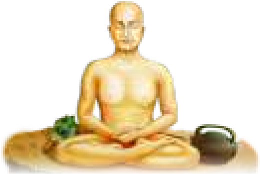

-: जाप्य मंत्र :-

॥ ॐ ह्रीं श्री उत्तमब्रह्मचर्यधर्माङ्गाय नमः ॥

सर्वोदय अहिंसा

सर्वः सर्वत्र नन्दतु